# यज्ञ का गीत

यज्ञ-रूप प्रभो हमारे भाव उज्जल कीजिये।
पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये॥
वेद की बोलें ऋचाएं सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचावें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की॥
लाभकारी हों हवन हर प्राणधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे॥